International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.233-235

बदलते वैश्विक आर्थिक – राजनैतिक परिदृश्य में भारत – बिम्सटेक संबंध

डॉ. पूरण प्रकाश जाटव*

प्रस्तावना

किसी ने ठीक ही कहा है कि दुनिया की शुरुआत घर से होती है। व्याक्ति से परिवार, परिवार से पास पडोस, पास पडोस से समाज, समाज से राष्ट्र से विश्व की ओर संबंधों का विस्तार होता है। भारत की विदेशनीति भी इस आधार पर काम करती दिख रहीं है।

प्रधानमंत्री के रुप में लगातार कार्यकाल हेतु श्री नरेन्द्र मोदी ने शपथ 30 मई 2019 को ग्रहण की है। इस शपथ ग्रहण समारोह में देश विदेश की अनेक हस्तियों को आमत्रित किया गया था। पडोसी पहले (Neighodorus Frist) की नीति का अनुसरन करते हुए इस बार बिम्सटेक देशो को विशेष रुप में शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया गया था अर्थात् इसका अभिप्राय है कि भारत अपनी दुनिया की शुरुआत अपने पडोस से करना चाहता है और यह वक्त की मांग भी है।

प्रधामंत्री श्री मोदी ने अपने दूसरे शपथ ग्रहण समारोह में विम्सटेक राष्ट्रों (बांगलादेश, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, नेपाल, भूटान) सहित किर्गिस्तान और मॉरिशस के नेताओ को आमंत्रित करके कूटनीतिक प्रयास करके वैश्विक समुदाय को संदेश दिया है। जब मोदी जी पहली बार प्रधानमंत्री चुने गए तो शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों को आमंत्रित किया गया था। जिसमें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भी शामिल हुए थे।

इस बार सार्क की जगह वे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी–सेक्टोरल टेक्निकल एण्ड इकोनमिक को ऑपरेशन (बिम्सटेक) राष्ट्रों को शामिल करने का उद्देश्य पाकिस्तान को समारोह से दूर रखना है।

अतः कूटनीति सोच का परिचय देते हुए उन्होने किर्गिस्तान को आमंत्रित किया। किर्गिस्तान को आमंत्रण करने के पीछे उनका उद्देश्य स्पष्ट है कि शंघाई को ऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन में भारत की स्थिति मजबूत करना है। भारत 2017 में पाकिस्तान के साथ ही इसका सदस्य बना था और अब संगठन में रणनीतिक भूमिका निभाना चाहता है तथा इसके साथ ही मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद जगन्नाथ जनवरी में प्रवासी भारतीय दिवस के मुख्य अतिथि थे। मॉरीशस विश्व भर में भारतवंशियां का जाना पहचाना देश है। मोदी सरकार 2014से ही भारवंशियों के बीच सक्रिय रहीं है। ऐसे में मॉरीशस को आमंत्रित करना स्वाभाविक है।

करीब दो दशक पहले भारत नें विम्सटेक को बंगाल की खाडी के समीप के देशों को मिलाकर पाकिस्तान रहित क्षेत्रीय संगठन के रुप में खडा किया था। बंगाल की खाडी विश्व की सबसे बडी खाडी है और इसके आस पास के सात देशों में विश्व की लगभग 22 फीसदी आबादी रहती है।

अतः बिम्सटेक देशों को शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित करना मोदी जी की कूटनीतिक एवं ऐतिहासिक पहल है जिसके अन्तर्गत पाकिस्तान को बाहर रखने के लिए सार्क की जगह बिम्सटेक दूसरा कूटनीतिक दांव है।

* सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बॉदीकुई, राजस्थान।

अब यह प्रश्न उठाना लाजिमी है कि क्या बिम्सटेक सार्क का विकल्प है? यह प्रश्न ऐसे समय में उठाया जा रहा है जब भारत ब्रिक्स सम्मेलन की मेजवानी की। कहा जा रहा है कि ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान भारत ने सार्क के बजाय बिम्सटेक देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित कर एक बार फिर पाकिस्तान को अलग थलग करने की कोशिश की है।

बिम्स्टेक का जहां तक सवाल है तो कुछ विशेषज्ञों को लगता है कि सार्क के जरिये भारत दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग और व्यापार कर रहा था लेकिन बिम्सटेक के बाद दक्षिण पूर्वी एशिया में भी भारत ने आपसी सहायोग और व्यापार को आगे बढाया जा सकता है।

बिस्सटेक देशों को साथ लाने के उद्देश्य :–

- चीन की बढती गतिविधियों को हिन्दमहासागर और बंगाल की खाडी में रोका जा सके तथा शांति स्थापित करने में अपना सहयोग दे सके।
- दक्षिण एशिया में चीन की शक्ति को प्रतिसन्तुलित करने के लिए ।
- पाकिस्तान की आतंकवादी छवी को उजागर करके क्षेत्रीय संगठनों से पाकिस्तान को अलग थलग करना।
- वाणिज्य प्रौघोगिकी तकनीकि और आर्थिक क्षेत्र में आपसी सहयोग बढाना
- बंगाल की खाडी और हिन्द महासागर में स्वतंत्र नौपरिवहन सुनिश्चित करना।
- समुद्री संसाधनों का स्थायी उपयोग सुनिश्चित करना।
- प्रत्येक सदस्य देशों द्वारा क्षेत्रीय सम्प्रभूता व अखंडता को मान्यता देना।
- क्षेत्र में परिवहन तंत्र का विस्तार करना।

बिम्सटेक की पृष्ठभूमि

- बिम्सटेक की स्थापना 6 जून 1997 को बैंकाक घोषणा के माध्यम से की गई थी।
- प्रारम्भ में आर्थिक ब्लॉक का गहन चार सदस्य राष्ट्रों (बांगलादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड) द्वारा किया गा था तथा इसे संक्षेप में BIST-EC कहा जाता था।
- दिसम्बर 1997 में म्यांमार को शमिल करने के बाद संगठन का नाम बदलकर BIMSTEC कर दिया गया। 2004 में भूटान और नेपाल को इस संगठन का सदस्य बनाया गया।
- बिम्सटेक का मुख्यालय बांग्लादेश के ढाका में स्थित है।
- अगस्त 2018 में नेपाल के काठमांडू में बिम्सटेक का चौथा शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था। बिम्सटेक के सदस्य देशों के बीच ऊर्जा सहयोग बढाने के लिए बिम्सटेक ग्रिड इंटरकनेक्शन की स्थापना के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया गया था।

बिम्सटेंक मे भारत की भूमिका

- पर्वतीय क्षेत्रों वाली अर्थव्यवस्था जैसे नेपाल तथा समूद्री क्षेत्र पर निर्भर अर्थव्यवस्था जैसे थाईलैंड तथा बांग्लादेश के सथ मुक्त व्यापार समझौता सहयोंग कर भारत इन देशों के संसाधनों का उपयोग अपने आर्थिक हित के लिए कर सकता है।
- इसके अलावा बिम्सटेक के अन्तर्गत सदस्य देशों के बीच सीमा शुल्क सहयोग समझौता और मोटर वाहन समझौता भी किया गया है। 2030 तक इस क्षेत्र मे बहुआयामी परिवहन संयोजकता का निर्माण करने तथा आर्थिक समन्वय स्थापित करने का निर्णय लिया गया है।
- बिम्सटेक द्वारा भारत की लुक ईस्ट पॉलिसी और एक्ट ईस्ट पॉलिसी को बढावा मिलता है।
- बिम्सटेक समूह सार्क के विकल्प के रुप में कार्य करता है जो भारत पाकिस्तान के आपसी विवद के कारण उलझा हुआ है।
- यह दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के वाणिज्य तथा बाजारों का लाभ उठाने का अवसर देता है। बलादान मल्टी मॉडल परियोजना एशियाई त्रिपक्षीय राजमार्ग और बीबिआईएन गलियारे के माध्यम से माल एवं वहनों की आवाजाही में वृद्धि हो सकती है। अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में एक अंतर जहाज केन्द्र विकसित करने का प्रस्ताव है जो इन द्वीपों को अन्तराष्ट्रीय बन्दगाह के रुप में विकसित कर सकता है।

निष्कर्ष

भारत को वास्तव में बिम्सटेक को सक्रिय बनाना है तो इसके सचिवालय को बडा करना चाहिए अभी हाल ही में ढाका में इसका सचिवालय है जहां 10–12 लोग है । उनके लिए 7 देशों की सरकारों में बडे बडे मुद्दे पर बात करना मुश्किल हो जाता है ऐसे में इस सचिवालय का विस्तार करना होगा। इसे और तकनीकी रुप में बेहतर बनाना होगा।

यह बात भी उठ रहीं है कि जापान जिसके काफी अच्छे रिस्ते है। इन सभी देशों में और इनमें जापान का आर्थिक सहयोग का इतिहास रहा है उसे बिम्सटेक में शामिल किया जाए। ऐसा करने का उद्देश्य यह है कि अर्थ और तकनीकी का एक स्त्रोत जुडे, बाकी जो भी देश है वे बहुत आगे नही है। जापान के पास पूंजी भी है और टेक्नोलॉजी भी है। ऐसे में इससे भी कुछ फायदा हो सकता है लेकिन किस रुप में जापान को जोडा जाता है। यह कहना मुश्किल है। क्योकि चीन भी इस क्षेत्र में इच्छुक है तो कुछ देशों को लगता है कि एक देश को लाया जाएगा तो दूसरा भी आएगा तो फिर तनाव पैदा हो जायेगा तो इन बातों पर भी विचार विमर्श करना पडेगा तभी बिम्सटेक प्रासंगिक हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- एंड्रयू हेवुड ग्लोबल पॉलिटिक्स, मेकमिलन पब्लिशर्स न्यूयॉर्क वर्ष 2018
- फ्रेंटलाईन (द हिन्दु) 30 मई 2019
- वर्ल्ड फोक्स नई दिल्ली जून 2019 (विशेष अंक)
- बी.एम जैन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर वर्ष 2018
- इण्डियन एक्सप्रेस समाचार पत्र 31 मई 2019
- एम.जे अकबर द मोदी डॉक्ट्रिन : इंडियाज फॉरेन पॉलिसी विजडम ट्री पब्लिशर्स नई दिल्ली 2016
- सुमित गांगुली भारतीय विदेशनीति, सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली 2015
- द टाइम्स ऑफ इंडिया 8 जून 2019 नई दिल्ली
- राजस्थान पत्रिका जयपुर 29 मई 2019.

❖◆❖